Vishwanath and Sons Review सूर्या की फिल्म ब्लॉकबस्टर या फ्लॉप?

विषय सूची (Table of Contents):

>> विश् वनाथ एंड सन्स रविव्यू सूर्या की नई फिल्म में कितना है दम?...
>> क्या है विश् वनाथ एंड सन्स की दिलचस्प कहानी?...
>> संजय विश् वनाथ का पारिवारिक ताना-बाना...
>> जीवन में नया मोड़ और सरोगेसी का फैसला...
>> शादी से दूरी और सरोगेसी संजय विश् वनाथ का अनोखा सफर...
>> सरोगेट मदर मैडी की भारत में एंट्री...
>> अतीत का रहस्य और शादी से इंकार...
>> इंटरवल तक कॉमेडी और इमोशन का बेहतरीन संतुलन...
>> मैडी का चुलबुला अंदाज और कॉमेडी...
>> भावुक दृश्यों का असर...
>> सेकेंड हाफ की धीमी रफ्तार और फिल्म का क्लाइमैक्स...
>> टीवी शो वाला दृश्य और कमजोर पहलू...
>> सूर्या, ममिता बैजू और बाकी स्टार कास्ट की शानदार एक्टिंग...
>> सूर्या का परिपक्व अभिनय...
>> ममिता बैजू, राधिका और रवीना टंडन का योगदान...
>> निर्देशन और पारिवारिक जुड़ाव कैसी है वेंकी अटलूरी की यह पेशकश?...
>> निष्कर्ष क्या आपको थिएटर में देखनी चाहिए विश् वनाथ एंड सन्स ?...
>> जनता के सवाल (FAQs)...

विश् वनाथ एंड सन्स रविव्यू: सूर्या की नई फिल्म में कितना है द

साउथ सिनेमा के सुपरस्टार सूर्या एक बार फिर सिनेमाघरों में अपनी नई पारिवारिक ड्रामा फिल्म विश् वनाथ एंड सन्स के साथ दस्तक दे चुके हैं। करुप्पु (तेलुगु में वीरभद्र) की शानदार सफलता के बाद दर्शकों को सूर्या से काफी उम्मीदें थीं। तमिल और तेलुगु दोनों भाषाओं में रिलीज हुई यह मूवी परिवार, रिश्तों और मां-बेटे के अनूठे बंधन पर केंद्रित है।

इस बहुप्रतीक्षित फिल्म का निर्देशन तेलुगु सिनेमा के मशहूर निर्देशक वेंकी अटलूरी ने किया है, जबकि इसका भव्य निर्माण नागवंशी द्वारा किया गया है। सूर्या के साथ इस फिल्म में युवा अभिनेत्री ममिता बैजू मुख्य भूमिका में नजर आ रही हैं। इसके अलावा वरिष्ठ अभिनेत्री राधिका और बॉलीवुड अभिनेत्री रवीना टंडन ने भी महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाई हैं।

यदि आप वीकेंड पर इस फिल्म का टिकट बुक करने की योजना बना रहे हैं, तो यह विस्तृत रिव्यू आपको यह तय करने में मदद

करेगा कि क्या यह फिल्म सिनेमाघरों में देखने लायक है या नहीं।

क्या है विश्वनाथ एंड सन्स की दिलचस्प कहानी?

फिल्म की पटकथा संजय विश्वनाथ (सूर्या) के जीवन पर केंद्रित है। संजय एक बेहद कामयाब बिजनेसमैन होने के साथ-साथ शूटिंग में ओलंपिक गोल्ड मेडल विजेता भी रह चुका है। जीवन के हर क्षेत्र में सफलता पाने के बावजूद वह एक निजी फैसले को लेकर अडिग रहता है।

संजय विश्वनाथ का पारिवारिक ताना-बाना

संजय 40 की उम्र पार कर चुका है लेकिन शादी के बंधन में बंधने से पूरी तरह कतराता है। वह अकेले ही अपनी जिंदगी बिताना पसंद करता है, लेकिन पिता बनने की चाहत उसे एक अलग रास्ते पर ले जाती है।

>> ओलंपिक चैंपियन का रुतबा:संजय एक अनुशासित और समाज में सम्मानित व्यक्ति है।

>> बिजनेस का साम्राज्य:वह अपने परिवार के विशाल कारोबारी साम्राज्य को कुशलता से संभालता है।

>> अकेलेपन का चुनाव:सफल होने के बावजूद वह वैवाहिक जीवन से दूरी बनाए रखता है।

जीवन में नया मोड़ और सरोगेसी का फैसला

संजय पिता बनने के लिए अमेरिका जाता है और वहां सरोगेसी का सहारा लेकर एक बेटे का पिता बनता है। वह अपने नवजात बच्चे को लेकर भारत लौट आता है और अकेले ही उसकी परवरिश करने लगता है। परिवार में बच्चे के आने से खुशियां तो आती हैं, लेकिन जल्द ही एक गंभीर समस्या दस्तक देती है।

शादी से दूरी और सरोगेसी: संजय विश्वनाथ का अनोखा सफर

जब सब कुछ ठीक चल रहा होता है, तभी संजय के मासूम बेटे को एक दुर्लभ और गंभीर बीमारी का पता चलता है। डॉक्टरों की जांच के बाद सामने आता है कि बच्चे की जान बचाने के लिए तुरंत बोन मैरो ट्रांसप्लांट की सख्त जरूरत है।

सरोगेट मदर मैडी की भारत में एंट्री

मेडिकल रिपोर्ट के अनुसार केवल बच्चे को जन्म देने वाली सरोगेट मां ही इस ट्रांसप्लांट के लिए उपयुक्त होती है। इसके बाद संजय दोबारा अमेरिका की उड़ान भरता है और अपने बेटे की 20 वर्षीय सरोगेट मां मैडी (ममिता बैजू) को खोजकर भारत लेकर आता है।

संजय का प्रारंभिक प्लान बेहद स्पष्ट होता है सर्जरी पूरी होते ही मैडी वापस अमेरिका लौट जाएगी। हालांकि, मैडी के भारत आते ही विश्वनाथ परिवार के घर की पूरी दिनचर्या और माहौल हमेशा के लिए बदल जाता है।

अतीत का रहस्य और शादी से इंकार

फिल्म केवल बीमारी या मेडिकल ड्रामा तक सीमित नहीं है। इसमें यह रहस्य भी गहराई से सामने आता है कि आखिर संजय शादी से इतना दूर क्यों भागता रहा। मैडी का चुलबुलापन संजय के जीवन में प्यार का नया एहसास लाता है, लेकिन अपने अतीत के कारण संजय इस भावना को स्वीकार करने में झिझकता है।

दुनियाभर के दिलचस्प घटनाक्रमों में जिस तरह कूटनीति करवट लेती है, उसी तरह इस कहानी में भी भावनाएं बदलती हैं। आप चाहें तो ट्रंप की चाल: भारत को तेल और पाकिस्तान द्वीप प्लान का सच! भी पढ़ सकते हैं।

इंटरवल तक कॉमेडी और इमोशन का बेहतरीन संतुलन

फिल्म की शुरुआत एक शानदार दृश्य से होती है जहां संजय को ओलंपिक में गोल्ड मेडल जीतते हुए दिखाया गया है। इसके बाद उसके पारिवारिक जीवन और कॉर्पोरेट जगत के संघर्ष को स्थापित किया जाता है।

मैडी का चुलबुला अंदाज और कॉमेडी

जैसे ही मैडी भारत आती है, फिल्म की टोन अचानक बदल जाती है। उसकी मासूम हरकतें, बेबाक संवाद और पारंपरिक परिवार के साथ तालमेल बिठाने की कोशिशें थिएटर में दर्शकों को खूब हंसाती हैं। सूर्या और ममिता बैजू के बीच की केमिस्ट्री पर्दे पर ताजी और मनोरंजक लगती है।

भावुक दृश्यों का असर

हंसी-मजाक के बीच निर्देशक ने मां और परिवार से जुड़े भावनात्मक पहलुओं को बहुत ही खूबसूरती से बुना है। इंटरवल का मोड़ दर्शकों के मन में भारी उत्सुकता पैदा करता है कि सर्जरी के बाद क्या मैडी वापस लौट जाएगी या परिवार का हिस्सा बनेगी।

खेल जगत की प्रेरणादायक कहानियों की तरह यह फिल्म भी जज्बातों से भरी है। इस संदर्भ मेंविराट के मुरीद हुए जोकोविच: कह दी करोड़ों फैंस का दिल जीतने वाली बातभी दर्शकों के बीच चर्चा का विषय है।

सेकेंड हाफ की धीमी रफ्तार और फिल्म का क्लाइमैक्स

इंटरवल के बाद फिल्म का फोकस पूरी तरह से भावनाओं और पारिवारिक टकराव पर केंद्रित हो जाता है। मां-बेटे के रिश्ते और अतीत के राज खुलने का दृश्य दर्शकों की आंखें नम कर देता है।

टीवी शो वाला दृश्य और कमजोर पहलू

फिल्म में एक टीवी शो से जुड़ा एपिसोड दिखाया गया है जो बेहद प्रभावशाली है और सूर्या के अभिनय की गहराई को दिखाता है। हालांकि, इसके तुरंत बाद पटकथा की गति थोड़ी धीमी पड़ जाती है।

>> शादी का लंबा सीक्वेंस:कहानी में शादी से जुड़े कुछ दृश्य बेवजह लंबे और खिंचे हुए महसूस होते हैं।

>> धीमी गति:इमोशनल ड्रामा को गहरा करने के चक्कर में कुछ जगहों पर गति प्रभावित हुई है।

>> पूर्वानुमानित क्लाइमैक्स:अंत तक आते-आते कहानी का अंतिम फैसला थोड़ा प्रेडिक्टेबल हो जाता है।

सत्ता और जीवन के जटिल दांव-पेचों को समझने के लिए आपपुतिन की कहानी: एक जासूस जो 2036 तक करेगा राज!को भी पढ़ सकते हैं।

सूर्या, ममिता बैजू और बाकी स्टार कास्ट की शानदार एक्टिंग

फिल्म का सबसे मजबूत स्तंभ इसके कलाकारों का बेहतरीन अभिनय है। हर कलाकार ने अपने किरदार के साथ पूरा न्याय किया है।

सूर्या का परिपक्व अभिनय

सूर्या ने संजय विश्वनाथ के किरदार को एक असाधारण गरिमा प्रदान की है। 40 वर्षीय सफल व्यक्ति का ठहराव, एक पिता का दर्द और एक बेटे का समर्पण उनके हर एक्सप्रेशन में झलकता है। भावुक दृश्यों में उनकी संवाद अदायगी सीधे दिल को

छूती है।

ममता बैजू, राधिका और रवीना टंडन का योगदान

ममता बैजू ने मैडी के रूप में ताजगी भरी परफॉर्मेंस दी है। उनकी ऊर्जा पर्दे पर जीवंतता लाती है। वरिष्ठ अभिनेत्री राधिका ने मां के रूप में हमेशा की तरह दिल जीतने वाला काम किया है, जबकि रवीना टंडन ने अपने संक्षिप्त लेकिन दमदार किरदार में गहरी छाप छोड़ी है।

निर्देशन और पारिवारिक जुड़ाव: कैसी है वेंकी अटलूरी की यह पेश

निर्देशक वेंकी अटलूरी ने आधुनिक समय के रिश्ते और पारंपरिक पारिवारिक मूल्यों के बीच संतुलन साधने की सफल कोशिश की है। सरोगेसी जैसे आधुनिक विषय को भारतीय पारिवारिक पृष्ठभूमि में ढालना एक संवेदनशील काम था, जिसे उन्होंने काफी हद तक कुशलता से संभाला है।

नागवंशी का निर्माण स्तर उच्च कोटि का है। फिल्म के दृश्य, बैकग्राउंड स्कोर और सिनेमैटोग्राफी कहानी के मिजाज के अनुकूल हैं। यदि सेकेंड हाफ के कुछ हिस्सों की एडिटिंग थोड़ी और कसी होती, तो फिल्म का प्रभाव और अधिक बढ़ सकता था।

निष्कर्ष: क्या आपको थिएटर में देखनी चाहिए विश् वनाथ एंड सन्

विश् वनाथ एंड सन्स एक साफ-सुथरी और दिल को छू लेने वाली पारिवारिक मनोरंजक फिल्म है। इसमें हंसी, भावनाएं, रिश्ते और बेहतरीन अभिनय का अच्छा मिश्रण है। अगर आप सूर्या के अभिनय के प्रशंसक हैं और परिवार के साथ एक संपूर्ण इमोशनल ड्रामा देखना पसंद करते हैं, तो यह फिल्म आपके लिए एक बढ़िया विकल्प साबित होगी।

जनता के सवाल (FAQs)

फिल्म में साउथ सुपरस्टार सूर्या मुख्य भूमिका में हैं और उनके साथ ममता बैजू फीमेल लीड रोल निभा रही हैं।

विश् वनाथ एंड सन्स का निर्देशन तेलुगु सिनेमा के जाने-माने निर्देशक वेंकी अटलूरी ने किया है।

यह एक संपूर्ण फैमिली इमोशनल और कॉमेडी ड्रामा फिल्म है, जो रिश्तों और पारिवारिक मूल्यों पर आधारित है।

कहानी संजय विश् वनाथ के जीवन, सरोगेसी से पिता बनने के सफर और उसके बीमार बेटे के इलाज के लिए सरोगेट मां के भारत

आने के इर्द-गिर्द घूमती है।

हाँ, वरिष्ठ अभिनेत्री राधिका ने सूर्या की मां का किरदार निभाया है और रवीना टंडन भी एक महत्वपूर्ण भूमिका में नजर आती हैं।

यह फिल्म मुख्य रूप से तमिल और तेलुगु भाषाओं में एक साथ सिनेमाघरों में रिलीज की गई है।

सूर्या और ममिता बैजू का शानदार अभिनय, मां-बेटे के भावुक दृश्य और पहले हाफ की बेहतरीन कॉमेडी फिल्म की सबसे बड़ी ताकत हैं।

इंटरवल के बाद शादी से जुड़े कुछ सीन थोड़े खिंचे हुए लगते हैं और फिल्म की गति कुछ समय के लिए धीमी हो जाती है।

हाँ, यह पूरी तरह से एक पारिवारिक फिल्म है जिसे परिवार के सभी सदस्यों के साथ थिएटर में देखा जा सकता है।

इस फिल्म का भव्य निर्माण प्रसिद्ध निर्माता नागवंशी द्वारा किया गया है।